

शालिपर्णी स्त्री. (तत्.) माष-पर्णी, उड़द के पत्ते।

शालिपिष्ट पुं. (तत्.) 1. चावल का आटा 2. स्फटिक, एक चमकदार और पारदर्शी पत्थर, चमकदार सफेद पत्थर 3. बिल्लौर।

शालिवाहन पुं. (तत्.) शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा, जिन्हें शक-संवत् का प्रवर्तक माना गया है।

शालिहोत्र पुं. (तत्.) 1. घोड़ा, अश्व 2. घोड़ा तथा अन्य पशुओं की चिकित्सा का विज्ञान, पशु-चिकित्सा विज्ञान 3. अश्वचिकित्सा पर एक संस्कृत-ग्रंथ का प्राचीन लेखक 4. अश्वशास्त्र-प्रवर्तक एक राजा।

शालिहोत्री पुं. (तत्.) 1. अश्व-चिकित्सक 2. पशु-चिकित्साविज्ञानी।

शाली पुं. (तत्.) एक समवर्णिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में रगण, 2 तगण और 2 गुरु के क्रम से 11 वर्ण होते हैं तथा 4-7 पर यति होती है स्त्री. काला जीरा, मेथी।

शालीन वि. (तत्.) 1. शाला संबंधी 2. अधृष्ट, विनीत, विनम्र, सुशील, लज्जाशील 3. समान, तुल्य 4. धनी पुं. गृहस्वामी।

शालीनता स्त्री. (तत्.) विनम्रता, लज्जा, नम्रता, सुशीलता, शिष्टता, लज्जाशीलता।

शालीना स्त्री. (तत्.) मिश्रैया, एक साग, सोआ का साग।

शालीय वि. (तत्.) शाला-संबंधी।

शालु पुं. (तत्.) 1. कुमुद आदि की जड़ 2. जातीफल, जायफल 3. कषाय द्रव्य, कसैला द्रव्य 4. चोरक औषधि 5. मेंढक।

शालुक पुं. (तत्.) कमल आदि की जड़।

शालू पुं. (तत्.) एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, 8 नगण, लघु और गुरु के योग से 29 वर्ण होते हैं तथा 14-15 पर यति होती है।

शालूक पुं. (तत्.) 1. कमलनाल 2. जातिफल, जायफल 3. मेंढक।

शालूर पुं. (तत्.) मेंढक।

शाल्मल पुं. (तत्.) 1. सेमल का पेड़, शाल्मलि 2. शाल्मलि वृक्ष का गोंद 3. पृथ्वी के सात खंडों में से एक खंड।

शाल्मलि पुं. (तत्.) 1. सेमल का पेड़ 2. पृथ्वी के सात खंडों में से एक खंड 3. नरक का एक भेद 4. पुराणों में वर्णित एक द्वीप विशेष।

शाल्मलिक पुं. (तत्.) 1. रोहितक वृक्ष 2. घटिया किस्म का शाल्मलि वृक्ष।

शाल्मलिनी स्त्री. (तत्.) सेमल का पेड़।

शाल्मली स्त्री. (तत्.) 1. सेमल का पेड़ 2. पाताल की एक नदी 3. नरक का एक भेद पुं. गरुड़।

शाल्व पुं. (तत्.) 1. उत्तर भारत का एक प्राचीन देश 2. मेरु प्रदेश का राजा।

शाव पुं. (तत्.) 1. पशु पक्षी का बच्चा, शावक, शिशु 2. मृत शरीर, शव 3. घर में किसी की मृत्यु पर होने वाला अशौच 4. मरघट वि. 1. शव संबंधी 2. मृत्यु से उत्पन्न 3. भूरे रंग का।

शावक पुं. (तत्.) पशु-पक्षी का बच्चा।

शावर पुं. (तत्.) 1. पाप, दुष्टता, अपराध, दोष, कसूर 2. लोध का वृक्ष।

शावरी स्त्री. (तत्.) केवाँच, शूकशिवी, कपिकच्छु, (खुजली पैदा करने वाले पौधे के फल का पाउडर)।

शाश्वत् पुं. (तत्.) निरंतर, सदा, सतत, पुनःपुनः, बार-बार लगातार, अनादि काल से।

शाश्वत वि. (तत्.) जो सदा बना रहे, सतत, नित्य, निरंतर, स्थायी पुं. 1. वेदव्यास 2. शिव 3. सूर्य 4. स्वर्ग 5. नित्यता 6. नैरंतर्य।

शाश्वतदर्शन पुं. (तत्.) ऐसे सत्य, प्रत्यय जो सभी दर्शनों में समान रूप से मान्य हैं, सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक सत्यों पर आधारित दर्शन (विश्व के प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो और अरस्तू के सिद्धांतों को आगे बढ़ाने वाले आधुनिक दार्शनिकों में से एक agostino steuco द्वारा सर्वप्रथम प्रयुक्त किया गया शब्द। perennial philosophy